International Journal of Research in Engineering and Science (IJRES)
ISSN (Online): 2320-9364, ISSN (Print): 2320-9356
www.ijres.org Volume 10 Issue 7 ǁ July 2022 ǁ PP. 889-895

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन" (Comparative study of environmental social consciousness between high secondary level students),

कुसुम देवी(शोध-छात्रा),(शिक्षक-शिक्षा विभाग),
नेहरू ग्राम भारती(मानित विश्वविद्यालय),कोटवा-जमुनीपुर-दुबावल,प्रयागराज,उ.प्र.,

सारांश :

पर्यावरणीय मुद्दों का अध्ययन करने से विभिन्न पर्यावरणीय खतरों या समस्याओं के विषय में जानकारी प्राप्त होती है । जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय गिरावट में तेजी से वृद्धि के कारण दुनिया भर के लोगों की गहरी सवेंदना प्राप्त की जाती है । मानव गतिविधियों के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय समस्याओं में अधिक से अधिक वृद्धि हो रही है । इसलिए, समाज में पर्यावरणीय सामाजिक चेतना और समझ बनाने के लिए उन्हें शिक्षित करना सभी प्रकार की पर्यावरणीय समस्याओं की रोकथाम और इलाज के लिए उन्हें जागरूक करना अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दे हैं । इस दृष्टिकोण के साथ, शोधार्थी ने प्रयागराज जनपद के "**उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन** किया । अध्ययन के उद्देश्य पर्यावरणीय सामाजिक चेतना की समग्र स्थिति की जांच करना और प्रयागराज जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच लिंग, क्षेत्र, विज्ञान एवं कला वर्ग के संबंध में पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर की तुलना करना है । वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि वर्तमान अध्ययन की प्रक्रिया में नियोजित की गई है । शोध अध्ययन के लिए मानकीकृत उपकरण शोधार्थिनी द्वारा स्वयं निर्मित पर्यावरणीय सामाजिक चेतना मापनी को डेटा के संग्रह के लिए नियोजित किया गया है । जिसमें सामाजिक चेतना से संबंधित 36 प्रश्न है । शोध अध्ययन से पता चलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का स्तर उच्च है । और पर्यावरण के बारे में उनकी सामाजिक चेतना के संबंध में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, विज्ञान और कला वर्ग के छात्रों के बीच भी कोई अन्तर नहीं है । लेकिन गणना किए गए टी-मूल्य पर पर्यावरण के प्रति उनकी सामाजिक चेतना के लिए लिंग के संबंध में लडकियों और लड़कों के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है।

मुख्य शब्दावली :

पर्यावरणीय सामाजिक चेतना, पर्यावरण शिक्षा, लिंग, कला वर्ग, विज्ञान वर्ग आदि ।

प्रस्तावना :

पर्यावरण एक ऐसी परिस्थिति हैं जिनके माध्यम से एक जीव चारों ओर से घिरा हुआ होता हैं, जिसमें सभी जैविक एवं अजैविक कारक शामिल होते है । जिनमें मनुष्य, पौधे, जानवर, रोगाणु और सभी अजैविक कारक के साथ साथ पानी, प्रकाश, मिट्टी, हवा, आदि शामिल हैं । अन्य शब्दों में, पर्यावरण, अन्य पर्यावरणीय जीवन को प्रेरित करता है और सभी को जीवित रहने की परिस्थिति और अस्तित्व की अवधि निर्धारित करता है । औद्योगिकीकरण और अनियोजित शहरीकरण का विस्तार, जनसंख्या विस्फोट के कारण, पर्यावरणीय गिरावट की समस्या तेजी से बढ़ रही है । पर्यावरण के लिए कई समस्याएं हैं, जैसे ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन कमी, सूखा, मिट्टी का कटना, वनों की कटाई और अन्य प्रदूषण जो हमारे पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं । इनमें से अधिकांश जलवायु पर्यावरण की समस्याएं मानव गतिविधियों से ही मुख्यतः उत्पन्न होती हैं । मानव नियमित रूप से अनुचित योजना और पारिस्थितिक सोच के बिना पर्यावरण संसाधनों का शोषण कर रहा हैं । स्थायी विकास की विकसित अवधारणा ने पर्यावरणीय स्थिरता के महत्व को बढ़ा दिया है, क्योंकि पर्यावरणीय स्थिरता के बिना टिकाऊ विकास को प्राप्त करना असंभव है । इसलिए, पर्यावरण के बारे में शिक्षित करना और जनता के बीच पर्यावरणी सामाजिक चेतना पैदा करना बहुत महत्वपूर्ण है । पर्यावरण शिक्षा और पर्यावरण के बारे में लोगों के बीच ज्ञान, कौशल, समझ, मूल्य, व्यवहार, क्षमताओं और जागरूकता के निर्माण की प्रक्रिया है । यह पर्यावरण के बारे में शिक्षा, पर्यावरण और शिक्षा के लिए शिक्षा के बारे में शिक्षा की प्रक्रिया है । स्टॉकहोम, स्वीडन में आयोजित मानव वातावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के बाद, पर्यावरण शिक्षा को विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण रूप से मान्यता प्राप्त हुई । दुनिया के कुछ अन्य देशों के साथ, भारत ने भी औपचारिक शिक्षा के सभी स्तरों पर पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य किया है । सामाजिक चेतना परिस्थितियों या तथ्यों की जानकारी कि एक अवधारणा है जो सीधे समझाने और समझने

की क्षमता रखती है । पर्यावरण जागरूकता पर्यावरण के विकास, पर्यावरणीय समस्याओं और पर्यावरण के परिणामों से संबंधित कारकों के बारे में समझने की दिशा में यह एक कदम है । पर्यावरण की सुरक्षा ही पर्यावरण शिक्षा और पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य है ।

समस्या कथन :

प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक : " **उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन**" **(Comparative study of environmental social consciousness between high secondary level students) है ।**

साहित्यिक सर्वेक्षण :

शोधार्थिनी द्वारा किये गये साहित्यिक अध्ययन में सुंदर (2015), अली (2016), लारजीनी (2017), और पूनम (2017) में पर्यावरण के बारे में जागरूकता के स्तर में लिंग भिन्नता का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया । पिछले अध्ययनों के संबंध में शर्मा (2006), घोष (2014), और अस्थाना और दशिति (2015), ने बताया कि पर्यावरण जागरूकता की स्थिति लड़कों और लड़कियों के छात्रों के बीच काफी समान है । बर्मन (2015), नागरा (2015), और कौर (2017), के परिणाम में स्थानीय और गौरव के लिए पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया । अस्थाना और दशिति (2015), मंडल और मंडल (2016), गुप्ता (2017), से पता चलता है कि ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर मौजूद नहीं है, जो उनके पर्यावरण जागरूकता से संबंधित हैं । इसके अलावा, मिश्रा (2012), सिंह (2016) और कौर (2017), द्वारा किये गये अध्ययन में विभिन्न धाराओं के छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता का एक अलग स्तर पाया गया । दूसरी ओर, दत्ता (2017), से पता चला कि अध्ययन के धाराओं के आधार पर, पर्यावरण जागरूकता में कोई भी भिन्नता नहीं है । भारत और विदेश में पर्यावरण जागरूकता के क्षेत्र में समीक्षा किए गए संबंधित अध्ययनों से, यह स्पष्ट है कि लोगों के बीच पर्यावरण जागरूकता की कोई बराबर या सार्वभौमिक स्थिति नहीं है ।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

पर्यावरण और पर्यावरणीय कारकों का अध्ययन करने वाले अध्ययनों की आवश्यकता और महत्व अब एक महत्वपूर्ण और उभरते क्षेत्र है, जिसमें दुनिया भर में शोधकर्ताओं के उत्सुकता की आवश्यकता प्रतीत होती है । हाल के दिनों में, आबादी का विस्फोट, औद्योगिकीकरण, अनिश्चितता वाले शहरीकरण, मिट्टी विनाश, प्रदूषण, सूखे, बाढ़, भूस्खलन, भूकंप, आदि जैसे प्राकृतिक खतरों आदि के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय गिरावट और पारिस्थितिक असंतुलन तेजी से बढ़ रहा है । जनता के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना और समझ बनाना, सभी प्रकार की पर्यावरणीय समस्याओं की रोकथाम और इलाज के लिए महत्वपूर्ण तरीका है । छात्र हमारे समाज के भविष्य के नागरिक हैं और वे समाज के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । पर्यावरण को बचाने के लिए उन्हें शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता हासिल करने की आवश्यकता है । आज पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का अध्ययन करना, पर्यावरणीय नैतिकता और पर्यावरणीय मूल्यों से लोगों को पर्यावरण के प्रति साक्षर बनाने के लिए उचित उपाय करने की आवश्यकता है । बल्कि सैद्धांतिक ज्ञान की मांग के बजाय, पर्यावरण शिक्षा को पर्यावरण के संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए, ज्ञान के बिना पर्यावरण के बारे में पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम बेकार है । हमारे देश की आबादी के बड़े हिस्से के रूप में युवा या छात्रों को टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल वातावरण में योगदान करने की जिम्मेदारी समझनी चाहिए । प्रकृति, संरक्षण, कारकों को रोकने और प्रकृति के संरक्षण के बारे में समझ और जागरूकता के साथ छात्रों को पोषण करने की आवश्यकता है । यही कारण है कि शोधार्थी ने पर्यावरण संरक्षण के लिए छात्रों के बीच सामाजिक चेतना जानने के लिए वर्तमान अध्ययन का चयन किया है । प्रयागराज के लोगों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का अध्ययन करने के लिए महत्वपूर्ण है कि प्रयागराज के अनुकूल माहौल को उनके पर्यावरणीय सामाजिक चेतना में कोई सकारात्मक या नकारात्मक योगदान करना है या नहीं । यह छात्रों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना उत्थान के लिए स्कूल प्राधिकरण को एक महत्वपूर्ण संदेश होगा । यह शोध अध्ययन सरकार, एनजीओ और पर्यावरणीय स्थिरता की ओर बढ़ने के लिए आम जनता के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश होगा । लेकिन कम से कम, एक विशेष अवधारणा में एक योग्यता, एक जागरूकता परीक्षण व्यक्ति के बीच जागरूकता बढ़ाने में सक्षम हो सकता है

शोध अध्ययन का उद्देश्य :

1. प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरण सामाजिक चेतना के स्तर का तुलना करना ।
2. प्रयागराज जिले के ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर की तुलना करना ।
3. लिंग के आधार पर प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर की तुलना करना ।
4. प्रयागराज जिले के विज्ञान और कला वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर की तुलना करना ।

शोध परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है ।

1. प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के बीच पर्यावरण सामाजिक चेतना में कोई अन्तर नही है ।
2. प्रयागराज जिले के ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है ।
3. लिंग के आधार पर प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है ।
4. प्रयागराज जिले के विज्ञान और कला वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है

जनसंख्या :

प्रयागराज जिले के सभी ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों (कक्षा 11 वीं और 12 वीं) की जनसंख्या को लिया गया है । शोध अध्ययन में कुल आठ उच्च माध्यमिक विद्यालयों जिसमें चार ग्रामीण और चार शहरी विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है । इन विद्यालयों से कुल 160 छात्रों को नमूना के रूप मे चयन किया गया । शोध अध्ययन के लिए चयनित स्कूलों के नाम निम्नलिखित हैं :

1. गवर्नमेंट इंटर कॉलेज प्रयागराज
2. गवर्नमेंट गर्ल्स इंटर कॉलेज प्रयागराज
3. स्वामी विवेकानंद इंटर कॉलेज प्रयागराज
4. जगत तारन गर्ल्स इंटर कॉलेज प्रयागराज
5. शिवाजी इंटर कॉलेज सहसों प्रयागराज
6. जवाहर लाल इंटर कॉलेज सहसों प्रयागराज
7. शिवकली रामसहाय यादव इंटर कॉलेज थरवई प्रयागराज
8. बाबू जे.आर.डी. पाल इंटर कॉलेज थरवई प्रयागराज

प्रयुक्त उपकरण :

यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग उत्तरदाताओं से डेटा के संग्रह के लिए किया गया । डेटा के संग्रह के लिए, शोधार्थी ने स्वयं निर्मित पर्यावरणीय सामाजिक चेतना स्केल का प्रयोग किया, जिसमें पर्यावरण के विभिन्न आयामों से जैव-विविधता, रिश्तों (पारिस्थितिकी के तत्वों के बीच), ओवरपोपुलेशन, खाद्य उत्पादन, स्वास्थ्य और स्वच्छता, आदतों की गिरावट, और हवा, पानी और मिट्टी के प्रदूषण, आदि पैमाने को तीन वर्गों

में विभाजित किया गया है । डेटा के संग्रह के लिए शोधार्थी व्यक्तिगत रूप से समय को ध्यान मे रखते हुये उनकी सुविधा के अनुसार, सभी आठ स्कूलों में उपकरण को संचालित और प्रशासित किया है ।

प्रयुक्त साख्यिकी प्रविधि :

सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रतिशत, मानक विचलन, टी-टेस्ट का उपयोग डेटा के विश्लेषण में किया गया है ।

आकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

संकलित किए गए डेटा को मानदंडों के अनुसार और निर्देशों के आधार पर दिए गए हैं और इन्हें निम्न तालिकाओं में प्रस्तुत किया जाता है ।

तालिका संख्या 01 :

पर्यावरणीय सामाजिक चेतना और आवृत्ति वितरण के स्कोर का वर्गीकरण ।

स्कोर की सीमा	आवृत्ति	प्रतिशत (%)	टिप्पणी
79-117	115	71.87	उच्च
40-78	44	27.5	औसत
00-39	1	0.62	कम

पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर पर तालिका संख्या 01 में कुल नमूनों का वितरित स्कोर, प्रतिशत के 71.87% (115) छात्र 79 से 117 तक के उच्च स्तर के हैं, 27.5% (44) छात्र 40 से 78 तक के औसत स्कोर के तहत है, और केवल 0.62% (1) छात्र 0 से 39 तक के रूप में निम्न स्कोर के तहत है ।

तालिका संख्या 02

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं को दिये गये पर्यावरणीय सामाजिक चेतना की तालिका :

संख्या	मध्यमान स्कोर	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन
160	83.02	70.96	13.97

तालिका संख्या 02 से स्पष्ट होता है कि उच्च-माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का मध्यमान स्तर 83.02 और मध्यमान प्रतिशत 70.96% है, तथा मानक विचलन 13.97 है । जिसे सामान्य रूप में एक अच्छे स्कोर के रूप में माना जा सकता है ।

विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रों के पास पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का उच्च स्तर है, छात्रों के एक तिहाई से कम एक पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का औसत स्तर है और छात्रों की एक नगण्य संख्या में कम सामाजिक चेतना स्तर है । इसलिए, यह कहा जा सकता है कि प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का स्तर काफी अधिक है ।

तालिका संख्या 03 :

प्रयागराज जिले के ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर की तुलना की तालिका :

समूह	संख्या	मध्यमान स्कोर	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन	टी-मूल्य
ग्रामीण	80	83.78	71.61	15.88	0.24
शहरी	80	82.26	70.30	11.09	

0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक ।

पर्यावरणीय सामाजिक चेतना परीक्षण में ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों द्वारा प्राप्त किए गए औसत मध्यमान स्कोर क्रमशः 83.78 और 82.26 है । और मध्यमान प्रतिशत क्रमशः 71.61% और 70.30% पाया गया है । तथा दोनों का मानक विचलन 15.88 और 11.09 प्राप्त होता हैं । इनके बीच टी-मूल्य का मान 0.24 है । टी- मूल्य 1.64 से सार्थकता स्तर 0.05 पर कम है । ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच उनके पर्यावरण के स्तर सामान्य है अतः परिकल्पना स्वीकृत होती हैं ।

तालिका संख्या 04 :

लिंग के आधार पर प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना स्तर के तुलना की तालिका :

समूह	संख्या	मध्यमान स्कोर	मध्यमान प्रतिशत	मानक विचलन	टी-मूल्य
लडकियों	80	87.07	74.41	11.44	3.81
लडके	80	78.97	67.50	15.13	

0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक ।

उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि पर्यावरण जागरूकता परीक्षण में लड़कियों और लड़कों द्वारा प्राप्त मध्यमान स्कोर क्रमशः 87.07 और 78.97 है । मध्यमान प्रतिशत क्रमशः 74.41% और 67.50% प्राप्त होता हैं । तथा मानक विचलन क्रमशः 11.44 एवं 15.13 हैं । दोनों माध्य मूल्यों को 1.64 डिग्री स्वतंत्रता के साथ महत्व के 0.05 सार्थकता स्तर पर 158 के महत्वपूर्ण मूल्य की तुलना में परीक्षण के अधीन किया गया है । इसलिए, घोषित शून्य परिकल्पना" पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के अपने स्तर में उच्च माध्यमिक स्तर के लड़कियों और लड़कों के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है " स्वीकार नहीं किया जाता है ।

विवेचना से प्राप्त होता है कि प्रयागराज जिले में उच्च माध्यमिक स्तर विद्यालयों की लड़कियों और लड़कों के छात्रों के बीच जागरूकता का स्तर काफी भिन्न है । यहां लड़कियां लड़कों की तुलना में काफी अधिक जागरूक हैं । इस शोध के संभावित कारण अधिक सौंदर्य बोध, प्रश्नावली का जवाब देने के दौरान गंभीरता और पर्यावरण के बारे में लड़कियों के बीच बेहतर विषय समझ के कारण हो सकते हैं ।

तालिका संख्या 05 :

4. प्रयागराज जिले के विज्ञान और कला वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर की तुलना की तालिका :

समूह	**संख्या**	**मध्यमान स्कोर**	**मध्यमान प्रतिशत**	**मानक विचलन**	**टी- मूल्य**
विज्ञान	**80**	**83.96**	**71.76**	**15.20**	**0.19**
कला	**80**	**82.08**	**70.15**	**12.65**	

0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक ।

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विज्ञान और कला वर्ग का मध्यमान स्कोर पर्यावरणीय सामाजिक चेतना परीक्षण पर छात्रों को क्रमशः 83.96 और 82.08 है । और मध्यमान प्रतिशत क्रमशः 71.76% और 70.15% प्राप्त होता हैं । तथा मानक विचलन क्रमशः 15.20 एवं 12.65 प्राप्त होता हैं । टी-मान 0.19 पाया गया है जो परिगणित टी-मान 0.05 सार्थकता स्तर से कम है । इसलिए शून्य परिकल्पना "पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर में उच्च माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान और कला वर्ग के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" यह परिकल्पना स्वीकार कि जाती है ।

अतः यह स्पष्ट है कि प्रयागराज जिले में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विज्ञान और कला वर्ग के छात्रों के बीच समान पर्यावरणीय सामाजिक चेतना है।

निष्कर्ष :

संकलित किए गए डेटा के विश्लेषण के बाद, परिणामों से पता चला है कि प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का समग्र स्तर काफी अधिक है । प्रयागराज जिले के ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय के छात्रों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का एक समान स्तर है । इसके अलावा, पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के अपने स्तर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विज्ञान और कला वर्ग के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, वे पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के स्तर के संबंध में समान हैं । लेकिन, पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का स्तर, उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के लड़कियों और लड़कों के बीच काफी अलग है । यहां लिंग के प्रति लड़कों की तुलना में लडकियों को काफी अधिक जानकारी हैं । निष्कर्षतः वर्तमान समय में, राज्यों को तेजी से औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण पर्यावरण की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। भविष्य में ये समस्याएं प्रयागराज की जैव विविधता के लिए प्रतिकूल

प्रभाव डाल सकती हैं। इसलिए, नई पीढ़ी को भविष्य के लिए एक चुनौती के रूप में पर्यावरणीय समस्याएं को लेनी चाहिए । वर्तमान अध्ययन प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों के बीच पर्यावरणीय सामाजिक चेतना की जांच करनी है । इस शोध अध्ययन से शोधार्थी ने निष्कर्ष निकाला है कि प्रयागराज जिले में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय के छात्रों मे पर्यावरणीय सामाजिक चेतना का स्तर उच्च है । दो लिंगों के बीच पर्यावरण जागरूकता के स्कोर की तुलना में, शोध अध्ययन लड़कों की तुलना में लड़कियों के बीच विपरीत है । लेकिन ग्रामीण और शहरी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों के बीच कला वर्ग की अपेक्षा विज्ञान वर्ग महत्वपूर्ण नहीं हैं । इसलिए, यह कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम में शामिल पर्यावरणीय सामग्री का योगदान पर्यावरण के बारे में जागरूकता पर्यावरण और इसने छात्रों के पर्यावरण ज्ञान पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा । और अधिक वातावरण पर पर्यावरण के बारे में सामाजिक चेतना का सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है ।

सुझाव :

शोध अध्ययन के परिणाम प्रयागराज जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय के छात्रों के बीच एक उच्च स्तर की पर्यावरणीय जागरूकता दिखाती हैं । लेकिन, स्कूलों को अपने स्तर के बीच उत्कृष्टता के लिए इस स्तर को आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए । जैसा कि खोज से पता चला है कि लड़कियों की तुलना में, लड़कों को पर्यावरणीय सामाजिक चेतना की स्थिति में निर्दिष्ट दिखाया जाता है, इसलिए यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाना चाहिए कि हर छात्र को ज्ञान, अनुभव, नैतिकता, मूल्यों, सकारात्मक दृष्टिकोण, दायित्वों और पर्यावरण के संरक्षण और सुधार के लिए आवश्यक कौशल के लिए समान अवसर प्रदान किए जाते हैं । फील्ड ट्रिप्स, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों, प्रकृति की पैदल चलने और प्रकृति अध्ययन के आयोजन के द्वारा स्कूल पर्यावरण के सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक ज्ञान के साथ पर्यावरण के बारे में जागरूकता पैदा कर सकते हैं । स्कूल पर्यावरण संरक्षण से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण दिनों का जश्न मना सकते हैं, दुनिया के पर्यावरण दिवस (5 जून), पृथ्वी दिवस (22 अप्रैल), राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (28 फरवरी), विश्व वानिकी दिवस (21 मार्च), विश्व जल दिवस (22 मार्च), विश्व स्वास्थ्य दिवस (7 अप्रैल), अंतर्राष्ट्रीय दिवस जैविक विविधता (22 मई), विश्व आबादी दिवस (11 जुलाई), विश्व ओजोन डे (16 सितंबर), राष्ट्रीय वन्यजीव सप्ताह (2 अक्टूबर), आदि पर्यावरण के संरक्षण से संबंधित छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए स्थापित किया जा सकता है और इस संबंध में, एक स्कूल गैर सरकारी संगठनों और समुदाय के साथ मिलकर काम कर सकता है । आज नवाचार की तकनीक से विभिन्न विषयों एड्स और आधुनिक तकनीकों को पर्यावरणीय सामाजिक चेतना के वास्तविक स्रोतों और पर्यावरण संरक्षण और संरक्षण के लिए ठोस रणनीतियों पर पहुंचने के लिए अपनाया जा सकता है। शोधार्थी ने भी अधिकतर स्थानों पर विभिन्न सामाजिक संस्थानों के विभिन्न हितधारकों के बीच पर्यावरण जागरूकता पर अधिक गहराई से अध्ययन किया है । लोगों के बीच पर्यावरण जागरूकता को मापने वाले जहां पर्यावरणीय गिरावट अधिक और बहुत महत्वपूर्ण है । पर्यावरण जागरूकता की स्थिति जानने के बाद, सार्वजनिक और शासकीय निकाय द्वारा उचित कदम उठाए जाने चाहिए ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. तोमर, ए. (2017), पर्यावरण शिक्षा नई दिल्ली: काल्पेज प्रकाशन

2. मिश्रा, के. (2012), महेश्वर और मंडलेश्वर के वितरक छात्रों, जिला-खार्गोन (एम.पी) के बीच पर्यावरण जागरूकता, अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ वैज्ञानिक और अनुसंधान प्रकाशन, 2 (11), 01-3

3. कुमार, एन.पी. (2013), आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय में शिक्षण संकाय के बीच पर्यावरण शिक्षा के बारे में जागरूकता पर एक मामला अध्ययन, मास्टर शोध प्रबंध इग्नू, नई दिल्ली

4. गोपीनाथ, जी.(2014), केरल राज्य के जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता पर एक अध्ययन, अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ एजुकेशन और मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, 3 (2), 54-57

5. बार्मन, एन. (2015), माध्यमिक स्तर के छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता का एक तुलनात्मक अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ साइंस, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में अभिनव अनुसंधान, 4 (3), 7575-7579

6. सुंदर, एस. (2015), बी.एड के पर्यावरण जागरूकता का एक तुलनात्मक अध्ययन कॉलेज के छात्रों के साथ उनके सेक्स और उनकी आत्म-अवधारणा के संबंध में सामाजिक विज्ञान और मानविकी में एजीयू इंटरनेशनल जर्नल ऑफिस, 1

7. बर्डन, एस. (2017), असम के जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता पर एक अध्ययन, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2 (2), 17-19।

8. लारिजनी, एम. (2017), उच्च प्राथमिक स्कूल शिक्षकों के बीच पर्यावरण जागरूकता का आकलन जर्नल ऑफ इक्वियन ऑफ इक्वोलॉजी, 31 (2), 121-124

9. पूनम (2017), रोहतक में माध्यमिक स्तर के छात्रों के बीच पर्यावरण जागरूकता का एक तुलनात्मक अध्ययन भारतीय और भारत के शिक्षा और अनुसंधान, भारत (आईआई), 39-41

10. शर्मा, एन.के. (2006), लिंग, ग्रामीण शहरी पृष्ठभूमि और शैक्षणिक धाराओं के संबंध में कॉलेज के छात्रों के पर्यावरण जागरूकता पर एक अध्ययन, शिक्षा में नए क्षितिज के ऑनलाइन जर्नल, 4 (2), 15-20

11.अस्थना, एस. और द्विवेदी, डी. के. (2015), बी.एड. के बीच पर्यावरण जागरूकता का एक अध्ययन, देहरादून जिले के उत्तमखंद अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ वैज्ञानिक और अभिनव अनुसंधान, 3 (1), 75-79

12. गुप्ता, एन. (2017), शहरी और ग्रामीण स्कूल के छात्रों के पर्यावरण जागरूकता इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग डेवलपमेंट एंड रिसर्च, 5 (1), 128-131

13. कपिल, एच. के. (2007), अनुसंधान विधियां, आगरा : हरप्रसाद भार्गव ।

14. गुप्ता, एस.पी. (2005), साख्यिकीय विधियां, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन ।

15. सारस्वत, मालती (1979), शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, लखनऊ : आलोक प्रकाशन ।

16. राय, पारसनाथ (2006), शैक्षिक अनुसंधान, आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ।